

कौंची स्त्री. (देश.) बांस की पतली टहनी।

कौंतेय पुं. (तत्.) 1. कुंती के पुत्र युधिष्ठिर, अर्जुन आदि।

कौंध स्त्री. (देश.) बिजली की चमक।

कौंधना अं.क्रि. (तद्.) बिजली का चमकना।

कौंधा स्त्री. (देश.) 1. बिजली की चमक, कौंध 2. बिजली।

कौंसलर पुं. (अं.) परामर्शदाता, सलाहकार।

कौंसिल स्त्री. (अं.) 1. किसी विषय पर विचार करने के लिए विद्वानों की सभा, कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए गठित संस्था, विधान सभा, जैसे-मैट्रोपोलिटन कौंसिल, नेशनल एडवाइजरी कौंसिल।

कौंटिलीय वि. (तत्.) कौंटिल्य का।

कौंटिल्य पुं. (तत्.) 1. टेढ़ापन, कुटिलता, कपट 2. चाणक्य का एक नाम।

कौटुंबिक वि. (तत्.) कुटुंब का, कुटुंब संबंधी 2. परिवारवाला।

कौड़ा पुं. (तद्.) बड़ी कौड़ी, बूई नाम का पौधा जिसे जलाकर सज्जी खार निकालते हैं **वि** (तद्.) कड़ुआ।

कौड़िया वि. (देश.) कौड़ी की तरह का, कौड़ी के रंग का, कुछ स्याही लिए हुए सफेद रंग का।

कौड़ियाला वि. (देश.) कौड़ी के रंग का हलका नीला (रंग) जिसमें कुछ गुलाबी सी झलक हो, **कोकई पुं.** (तद्.) कोकई रंग का 2. एक प्रकार का विषैला साँप जिस पर कौड़ी के रंग और आकार की चित्तियाँ पड़ी रहती हैं 3. कंजूस अमीर, एक पौधा जो ऊसर भूमि में पैदा होता है, शंखपुष्पी पर्या. मेध्या, चंडा, सुपुष्पी, किरीटी, कंडुमालिनी, भुलग्न, यममालिनी, मलविनाशिनी, सर्पाक्षी।

कौड़ियाही वि. (देश.) बहुत थोड़े धन के लालच से कोई भी शुभ-अशुभ कार्य करने वाली।

कौड़ी स्त्री. (तद्.) 1. समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह एक अस्थिकोश के अंदर रहता है 2.

प्राचीन काल की एक मुद्रा मुहा. कौड़ी का- जिसका कुछ मूल्य न हो, तुच्छ; कौड़ी काम का नहीं- किसी काम का नहीं, निकम्मा; कौड़ी या दो कौड़ी का- जिसका कुछ मूल्य नहीं, निकृष्ट, खराब; कौड़ी के तीन तीन बिकना- बहुत सस्ता होना; कौड़ी के तीन-तीन होना-बहुत सस्ता होना, बेकदर होना; कौड़ी मोल या कौड़ी के मोल बिकना-बहुत सस्ता बिकना; कौड़ी को न पूछना- मुफ्त भी न लेना, नितांत तुच्छ समझना; कौड़ी कोस दौड़ना- एक कौड़ी के पीछे कोसों का धावा मारना, थोड़े लाभ के लिए बहुत परिश्रम करना; कौड़ी कौड़ी- एक एक कौड़ी; कौड़ी कौड़ी को मुहताज- रुपये पैसे से बिलकुल खाली; कौड़ी कौड़ी अदा करना- चुकाना या भरना, सब ऋण चुका देना; कौड़ी कौड़ी भर पाना- सारा लहना वसूल कर लेना; कौड़ी-कौड़ी जोड़ना- थोड़ा थोड़ा करके धन इकट्ठा करना; कौड़ी फिरना- जुए में अपना दाँव पड़ने लगना; कौड़ी के बदले हीरा देना- खराब वस्तु लेकर अच्छी वस्तु देना; कौड़ियों पर दाँत देना- लोभी होना; कौड़ी फेरे करना-बहुत फेरे लगाना; कौड़ी भर- बहुत थोड़ा सा; कानी या फूटी कौड़ी- बहुत कम धन; गाँठ में कानी फूटी कौड़ी नहीं. चले हैं व्यापार करने।

कौतुक पुं. (तत्.) 1. कुतूहल 2. आश्चर्य 3. विनोद 4. आनंद, प्रशंसा 5. खेल तमाशा 6. वह मांगलिक सूत्र (कंगन) जो विवाह से पहले पहना जाता है 7. पर्व उत्सव 8. उत्सुकता 9. आश्चर्यजनक वस्तु।

कौतुकी वि. (तत्.) 1. खेल-तमाशा करने वाला 2. विनोदी 3. विवाह-संबंध कराने वाला।

कौतूहल पुं. (तत्.) 1. जिज्ञासा 2. उत्सव।

कौपीन पुं. (तत्.) 1. गुह्य भाग को ढकने वाला वस्त्र 2. लंगोटी, वस्त्रखंड 3. चीथड़ा 4. पाप, कुकर्म।

कौम स्त्री. (अर.) 1. वर्ण, जाति 2. सल्तनत, राष्ट्र

कौमपरस्त वि. (अर.) राष्ट्रवादी (जातिवादी)।

कौमार पुं. (तत्.) 1. कुमार अवस्था, जन्म से 16 वर्ष तक की आयु 2. कुमार 3. एक पर्वत का नाम 4. कुमारी का पुत्र।